# नमाज़ पढ़ो | By Haji Aslam sabri |

नबी की तरह से ऐ मुसलमानों नमाज़ पढ़ो
ख़ुदा के वास्ते ऐ दोस्तों नमाज़ पढ़ो

नमाज़ पाँचों रुक्न में रुक्न निराला है
क़सम ख़ुदा की, ख़ुदा की क़सम ये आला है
इस अमल की बदौलत हुज़ूर अपने हैं
यही अमल तो हमें बख़्शने वाला है
जवाँ है इश्क़ तो ऐ आशिक़ो नमाज़ पढ़ो
ख़ुदा के वास्ते ऐ दोस्तों नमाज़ पढ़ो

नमाज़ जाने बराही, मुदई, ख़लीम भी है
ब-रोज़े हश्र अदालत में ये वकील भी है
नमाज़ कुंजे मुहम्मद का है बहाना भी
नमाज़ फ़ैज़-ए-ख़ुदामंद की दलील भी है
करो न देर, अब आओ चलो नमाज़ पढ़ो
ख़ुदा के वास्ते ऐ दोस्तों नमाज़ पढ़ो

तुम्हारा रिज़्क यहाँ भी बढ़ाने वाली है
अजल के बाद भी ये काम आने वाली है
नमाज़ अब्र है और अब्र भी शरीअत का
नमाज़ आग से तुमको बचाने वाली है
जो दो जहाँ में भला चाहो तो नमाज़ पढ़ो
ख़ुदा के वास्ते ऐ दोस्तों नमाज़ पढ़ो

ज़माना क्या है, ज़माने की क्या मुसीबत है
जो तुम हो सच्चे मुसलमान तो क्यों शिकायत है
नमाज़ के लिए ऐ रूह यही काफ़ी है
नमाज़ इज़्ज़त दुनिया है, हमें जन्नत है
खुला है दर अभी तौबा करो नमाज़ पढ़ो
ख़ुदा के वास्ते ऐ दोस्तों नमाज़ पढ़ो

ऐ मोमिनों सुनाऊँ तुम्हें क़िस्सा-ए-नमाज़
होता है इस कहानी का इस तरह से आग़ाज़
एक शख़्स राह भूल के सेहरा में आ गया
सेहरा से फिर न जाना मयस्सर उसे हुआ
सेहरा में आके प्यास लगी थी कुछ इस तरह
पानी की जुस्तजू में वो प्यासा ही मर गया

दो दिन तक उसका सेहरा में लाशा पड़ा रहा
दो दिन के बाद एक बशर का गुज़र हुआ
देखा जो उसने लाशा-ए-इंसान पड़ा हुआ
इस माजरे को देख के हैरत ज़रा हुआ
फिर उसने चारों सिम्तें देखीं कोई न था
चिल्लाया ज़ोर-ज़ोर से फिर वो कि ऐ ख़ुदा
क़ुदरत ये तेरी कैसी है, कैसा है तेरा राज़
सुनता नहीं किसी की यहाँ कोई भी आवाज़

देखे फिर उसने आते हुए पाँच घुड़सवार

उनसे वो शख़्स कहने लगा होके अश्कबार
ऐ भाइयों ये लाशा-ए-इंसान है बे-कफ़न
आओ कि कर दें इसको ज़रा मिलके हम दफ़न
लेकिन वो घुड़सवार ख़ामोशी से चल दिए
वो उनको देखता ही रहा आँख नम किए

फिर उसने सुने देखे आते हुए चार घुड़सवार
उनसे भी उसने यही कहा होके अश्कबार
ऐ भाइयों ये लाशा-ए-इंसान है बे-कफ़न
आओ कि कर दें इसको ज़रा मिलके हम दफ़न
लेकिन वो घुड़सवार भी चुपचाप चल दिए
उनको भी देखता रहा वो आँख नम किए

फिर उसने देखे आते हुए तीस घुड़सवार
उनसे भी उसने यही कहा होके अश्कबार
ऐ भाइयों ये लाशा-ए-इंसान है बे-कफ़न
आओ कि कर दें इसको ज़रा मिलके हम दफ़न
लेकिन वो घुड़सवार भी चुपचाप चल दिए
उनको भी देखता रहा वो आँख नम किए

फिर उसने देखे आते हुए दो ही घुड़सवार
उनसे भी उसने यही कहा होके अश्कबार
ऐ भाइयों ये लाशा-ए-इंसान है बे-कफ़न
आओ कि कर दें इसको ज़रा मिलके हम दफ़न
वो दो भी उसको जाने लगे यूँ ही छोड़ कर
फिर उस बशर ने रोका उन्हें तेज़ दौड़कर

और पूछा उनसे भाइयों ये कैसा राज़ है
हर एक बशर के लब पे क्यों नफ़रत का साज़ है
दोनों ने मुस्कुराके दिया उसको ये जवाब
ये राज़ सुनना चाहो तो सुन लीजिए जनाब

आए थे सबसे पहले जो गुल-पाँच घुड़सवार
जो बन गए थे अजनबी सुन कर तेरी पुकार
वो पाँच वक़्त की थी नमाज़ें सुन ऐ बशर
जिनसे रहा ये शख़्स हमेशा ही बेख़बर
इसने कभी नमाज़ को दिल से न लगाया
इस वास्ते तो उनको तरस इस पे न आया

आए थे उसके बाद जो फिर चार घुड़सवार
वो फ़ात मुबारक के महीने की जुमे चार
जिनको अदा न कर सका ये शख़्स एक बार
हालात पे इसकी वो न हुए यूँ ही अश्कबार

आए थे उसके बाद जो फिर तीस घुड़सवार
जो सुन न सके दर्द भरी तेरी ये पुकार
रमज़ान पाक के थे रोज़े सुन ऐ बशर
एक रोज़ा भी न रख सका ये शख़्स उम्र भर
वो भी इसी लिए न तरस इस पे खा सके
इस वास्ते वो इसको न कंधा लगा सके

हम दोनों कौन हैं कि ज़रा ये भी जान ले
ग़ाफ़िल नमाज़ से तू न होगा ये ठान ले
सुन लेना यही ईद और बकरा ईद है
या अब भी तू बता दे ज़रा ख़्वाबदीद है

हमसे भी बे-मियाद रहा है ये उम्र भर
क्या है हमारी बरकतें इसको नहीं ख़बर
ये कह के उसकी नज़रों से ओझल वो हो गए
वो देखते ही देखते सेहरा में खो गए

तन्हा फिर उस बशर ने ही दफ़ना दिया उसे
उसके सही मक़ाम पे पहुँचा दिया है उसे

ऐ मोमिनों जो लेते नहीं उस खुदा का नाम
उनका जहाँ में होता है बस ऐसा ही अंजाम
खुदा के वास्ते ऐ दोस्तों नमाज़ पढ़ो
खुदा के वास्ते ऐ दोस्तों नमाज़ पढ़ो
खुदा के वास्ते ऐ दोस्तों नमाज़ पढ़ो
खुदा के वास्ते ऐ दोस्तों नमाज़ पढ़ो

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a8%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%9c%e0%a4%bc-%e0%a4%aa%e0%a4%a2%e0%a4%bc%e0%a5%8b-by-haji-aslam-sabri/